7 जुलाई 2015 में विवेक वर्धिनी बालिका विद्यालय, हैदराबाद के शताब्दी महोत्सव के अवसर पर माननीय अध्यक्ष का उद्घाटन भाषण ।

विवेक वर्धिनी बालिका विद्यालय, हैदराबाद के सौ वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में आयोजित शताब्दी महोत्सव में आप सबके बीच आकर मुझे बहुत ख़ुशी हो रही है। मैं विवेक वर्धिनी शिक्षा समिति, हैदराबाद को धन्यवाद देती हूँ कि आपने मुझे यहाँ आमंत्रित किया और इस प्रतिष्ठित विद्यालय के युवा छात्रों के साथ कुछ समय बिताने का मौका दिया।

यह बहुत ख़ुशी की बात है कि विवेक वर्धिनी शिक्षा समिति ने बहुत पहले बालिका शिक्षा के महत्व को समझा और 1916 में हैदराबाद में विवेक वर्धिनी बालिका विद्यालय की स्थापना की। उन दिनों लोग लड़कियों की पढ़ाई को जरूरी नहीं समझते थे। लड़कियों को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता था। लड़कियों के पढ़ाने-लिखाने को लेकर लोगों की बहुत ही संकीर्ण मानसिकता थी। लड़कियों को स्कूल नहीं जाने दिया जाता था। लड़कियों को पढ़ाने के लिए कोई नीतियां, कार्यक्रम और अनुकूल माहौल नहीं था। ऐसी परिस्थितियों में विशेष रूप से लड़कियों के लिए विद्यालय की स्थापना वास्तव में एक सराहनीय कदम था। Brigham Young का एक महत्वपूर्ण कथन ऐसी संस्थाएं चरितार्थ करता है- 'अगर आप एक बालक को शिक्षित करते हैं तो सिर्फ एक पुरुष को

शिक्षित करते हैं; लेकिन अगर आप एक बालिका को शिक्षित करते हैं, तो पूरी पीढ़ी को शिक्षित करते हैं।

मुझे यह जानकर ख़ुशी हुई है कि आज विवेक वर्धिनी शिक्षा समिति के तत्वावधान में 19 से भी अधिक संस्थाएं कार्यरत हैं जो शिक्षा के प्रचार-प्रसार और विशेष रूप से मराठी माध्यम में शिक्षा प्रदान करने में बहुत योगदान कर रही हैं। मैं विवेक वर्धिनी बालिका विद्यालय के सौ साल पूरे होने पर बधाई देती हूँ और कामना करती हूँ कि आने वाले वर्षों में भी यह स्कूल बुलंदियों को छूता रहे और अच्छे स्तर की शिक्षा देता रहे।

प्यारे छात्रो, विवेक वर्धिनी बालिका विद्यालय स्कूलों के बड़े नेटवर्क के माध्यम से छात्रों को बेहतर शिक्षा देता आया है। मुझे इस बात की ख़ुशी है कि इस विद्यालय ने बड़ी ख्याति अर्जित की है और इस विद्यालय से हमें अनुशासित और प्रतिभाशाली छात्र मिलते रहे हैं। यह विद्यालय छात्राओं को सामाजिक, नैतिक और आध्यत्मिक मूल्यों की शिक्षा भी देता है।

मित्रो, शिक्षा के महत्व के बारे में जितना कहा जाए, कम होगा। शिक्षा हमारी सांस्कृतिक विरासत का आधार रही है। हम सब जानते हैं कि शिक्षा हमारे जीवन में सबसे कीमती है। संस्कृत के एक श्लोक में सही कहा गया है :

न चोरहार्यं न च राज्यहार्यं न भ्रातृभाज्यं न च भारकारी।
व्यये कृते वर्धते एव नित्यं विद्या धनं सर्वधनप्रधानम् ॥

इसका अर्थ है कि विद्या धन सबसे बड़ा धन है। चोर इसे चुरा नहीं सकते और राजा इसे छीन नहीं सकता। भाई इसे बांट नहीं सकते, परन्तु इसे जितना बांटो, यह उतना ही बढता है।

वैदिक काल से लेकर आज तक हमारे लिए शिक्षा का अर्थ वह प्रकाश स्त्रोत है जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हमारा मार्गदर्शन करता है। इतिहास बताता है कि भारत प्राचीन काल में वैभवशाली व गौरवमय देशों में रहा है। यहाँ की शिक्षा व्यवस्था सभ्यता एवं संस्कृति की द्योतक है। इसकी नींव आध्यात्मिकता पर आधारित रही है।

स्त्रियों को प्राचीन काल से ही शिक्षा का अधिकार था, परन्तु आज स्थिति बहुत अधिक संतोषजनक नहीं है। आज भी स्त्रियां गृहस्वामिनी और अर्द्धांगिनी के रूप में ही मुख्य रूप से दिखाई देती हैं। ऋग्वैदिक काल में स्त्रियों की वैयक्तिक मर्यादा सुरक्षित थी। स्त्रियों को लौकिक एवं पारलौकिक दोनों ही क्षेत्रों में कल्याणकारी रूप में देखा जाता था। स्त्रियों की महत्ता को वैदिक साहित्य में मुक्त कंठ से वर्णित किया गया है। वैदिक वांङमय में लक्ष्मी, शक्ति, दुर्गा की श्रेणी में अदिति, इन्द्राणी, उषा, इळा, भारती, श्रद्धा आदि को स्थान दिया गया है तथा ये देवियाँ उनके तत्वों की अधिष्ठात्री देवी कही गई हैं।

वेदों में कहा गया है कि ब्रह्माचारिणी स्त्रियों का विवाह विद्वान पुरुष से ही होना चाहिए, साथ ही स्त्रियों के वैदुष्यपूर्ण व्यवहार एवं शिक्षा की भी चर्चा है। वेदों में बहुत सारे मंत्रों को स्त्री द्वारा ही पढ़वाया

गया है। स्त्रियों का पढ़ना अत्यन्तावश्यक था क्योंकि बिना पढ़े वे अग्निहोत्र नहीं कर सकती थीं।

शिक्षा एक ऐसी चीज है जो हर इंसान के लिए इस तरह महत्वपूर्ण है जिस तरह ऑक्सीजन जीवन के लिए जरूरी है। शिक्षा के बिना मनुष्य बिल्कुल जानवर की तरह है। यह बुद्धि और चेतना के धन से इंसान को मालामाल करती है और जीवन की हकीक़तों से अवगत कराती है। बिना ज्ञान मनुष्य कभी भी सीधी राह पर नहीं चल सकता है। ज्ञान ही मनुष्य को अधिकार की राह की ओर ले जाता है।

आज के विकसित दौर में जो भी देश का निर्माण व विकास चाहता है, वह अपनी विकास यात्रा में पुरुषों के साथ-साथ महिलाओं की भागीदारी भी चाहता है क्योंकि किसी भी देश के विकास एवं उन्नति में पुरुषों के साथ महिलाओं की भूमिका भी बहुत महत्वपूर्ण है और जो महिलाएं इस भूमिका में हिस्सा ले रही हैं, उनके महत्व को बिल्कुल इन्कार नहीं किया जा सकता है। महिलाएं भी पुरुषों की तरह विभिन्न विभागों एवं सेवाओं में हिस्सा लेकर देश की सेवा कर रही हैं।

आजादी मिलने के बाद भारत में शिक्षा के क्षेत्र में बहुत प्रगति हुई है। वर्ष 1911 में भारत में साक्षरता दर 5.92 प्रतिशत और महिला साक्षरता 1.01 प्रतिशत थी । 1951 में साक्षरता दर 18.33 प्रतिशत थी । वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार हमारी साक्षरता दर 73 प्रतिशत है और महिला साक्षरता में भी उल्लेखनीय सुधार हुआ है । महिला साक्षरता

दर 64.6 प्रतिशत है जो 80.9 प्रतिशत की पुरूष साक्षरता दर से अभी भी कम है किंतु पुरूष साक्षरता में 5.6 प्रतिशत की वृद्धि की तुलना में महिला साक्षरता में 10.9 प्रतिशत की वृद्धि हुई है । मैं समझती हूं कि इतना ही काफी नहीं है । बालिकाओं की शिक्षा के लिए अभी बहुत कुछ करना बाकी है । सरकार, सिविल समाज, मीडिया और अन्य संबंधित व्यक्तियों को समाज की पुरूष प्रधान सोच बदलने, महिलाओं को अपनी निहित क्षमता का पूर्ण उपयोग करने के लिए सशक्त बनाने और उनकी आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए प्रयास करने होंगे ।

मित्रो, आप जानते हैं कि हमारे प्रधानमंत्री जी ने 22 जनवरी, 2015 को बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ और सुकन्या समृद्धि कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य जागरूकता उत्पन्न करना और बालिकाओं के जन्म और शिक्षा को प्रोत्साहित करना है। आपको ज्ञात होगा कि हम किशोरियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रति वर्ष 24 जनवरी का दिन राष्ट्रीय बालिका दिवस के रूप में मनाते हैं।

हमारे बच्चों के जीवन में स्कूली शिक्षा का समय बहुत ख़ास होता है क्योंकि इस समय जिन संस्कारों के बीज बोये जाते हैं, वह समय आने पर अंकुरित होते हैं और एक बच्चा परिपक्व वयस्क बनता है। इसलिए यह बहुत जरूरी है कि विद्यालयों स्तर पर ही सही संस्कार दिए जाएँ। इन संस्कारों में सही विचार अर्थात बड़ों का आदर, अपनी संस्कृति का सम्मान, समय की

पाबंदी, किताबें पढ़ना, पर्यावरण की देखभाल, स्वास्थ्य और सफाई के प्रति जागरूकता, सामाजिक संवेदनशीलता और मानवता के गुण आदि शामिल हैं। जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होता है, ये विचार एक दृष्टिकोण बन जाते हैं। ऐसा केवल अच्छी शिक्षा से ही संभव है। लेकिन शिक्षा क्या है? **स्वामी विवेकानंद के शब्दों में ' शिक्षा वह जानकारी नहीं है जो हमारे दिमाग में डाली जाती है और जिसे समझे बिना ही हम अपना जीवन बिता दें। शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसमें विचारों के समावेश से मानव निर्माण, चरित्र निर्माण और जीवन निर्माण होता है ।' Intelligence plus character is the greatest goal of education.**

कहा गया है -

“विद्या ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम्।

पात्रत्वात् धनमाप्नोति धनाद्धर्मः ततः सुखम्।।”

सही शिक्षा मनुष्य को अलंकृत करती है। आपको इस विद्यालय के परिसर में श्रेष्ठ वातावरण एवं गुरुजनों का सान्निध्य है। इसका लाभ उठाएं, एवं जिज्ञासु विद्यार्थी बने; विभिन्न विषयों की अवधारणा को स्पष्ट करें और जीवन में सफलता हासिल करें। अपने लक्ष्य से विचलित ना हों। माता-पिता शिक्षा की व्यवस्था करते हैं। गुरुजन हमें पढ़ाएंगे, पर आपकी लगन और एकाग्रता ही आपको आगे ले जाएगी। अंग्रेजी में एक

कहावत है - 'Teachers open the door, but you must enter by yourself'.

शिक्षा हमारे समाज की आत्मा है जो कि एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती है। आप सब इस बात से सहमत होंगे कि स्कूली शिक्षा की नींव जितनी मजबूत होगी, जीवन में बच्चे के समग्र विकास की संभावना भी उतनी ही अधिक होगी। जहाँ शिक्षा में उत्कृष्टता पर पर्याप्त ध्यान दिया जाना चाहिए, वहीं हमें इस बात पर भी ध्यान देना है कि शिक्षा का अर्थ कक्षाओं में जाकर अलग-अलग विषयों की शिक्षा ग्रहण करना ही नहीं है , शिक्षा का अर्थ है – व्यक्ति का सर्वांगीण विकास और चरित्र निर्माण। शिक्षा विकास का सबसे महत्वपूर्ण माध्यम है। इसे लोगों, विशेष रूप से सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से कमजोर लोगों को सशक्त बनाने का सर्वोत्तम साधन भी माना जाता है।

प्रिय छात्रो, चाहे प्राथमिक शिक्षा हो या फिर उच्च शिक्षा, हमारे राष्ट्रीय एजेंडा में यह सदैव उच्च प्राथमिकता पर रही है । स्वतंत्र भारत के संस्थापकों ने शिक्षा के महत्व को सदैव स्वीकार किया है, हमारे संविधान के अनुच्छेद 45 में निहित एक नीति निदेशक तत्व में 14 वर्ष की आयु तक के सभी बच्चों के लिए निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान किया गया है । हाल के वर्षों में हमारी सरकार ने शिक्षा की ओर बहुत ध्यान दिया है और वह सभी के लिए शिक्षा का लक्ष्य प्राप्त करने के

लिए पूरी ईमानदारी से कार्य कर रही है । मझे विश्वास है कि आप सब को ज्ञात होगा कि हमारी संसद ने वर्ष 2002 में 86वां संविधान संशोधन अधिनियम पारित किया है जिससे शिक्षा का अधिकार मूल अधिकार बन गया है । परिणामस्वरूप, हमारी संसद ने वर्ष 2009 में निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम पारित किया है । भारत के इतिहास में यह एक उल्लेखनीय अधिनियम है । सर्व शिक्षा अभियान के माध्यम से हमारा देश सभी के लिए और विशेष रूप से 6 से 14 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों को शिक्षा प्रदान करने की वचनबद्धता पूरी कर रहा है।

सही और उचित शिक्षा से ही हमारी बालिकाओं का सम्पूर्ण विकास होगा और वह एक सशक्त स्वावलम्बी महिला बनेगी और यही महिला सशक्तिकरण का उद्देश्य है। आप सब नोबेल पुरस्कृत मलाला युसुफजई के नाम से भलीभांति परिचित होंगे, जिसने 11 साल की छोटी उम्र से लड़कियों को शिक्षा के समान अवसर के लिए अपनी आवाज़ उठाई।

इस परिप्रेक्ष्य में, मैं यह कहना चाहुंगी कि आप सभी छात्राएं, जो इस प्रतिष्ठित विद्यालय में शिक्षा ग्रहण कर रही हैं, को संकल्प करना चाहिए कि पूर्ण निष्ठा और लगन से पढ़कर आप जीवन में आगे बढ़ेंगी और परिवार, समाज और देश हित में काम करेंगी।

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि हमने अपनी संसद में छात्रों तथा युवाओं, और विशेषकर समाज के सुविधाविहीन वर्गों के बच्चों के

लाभार्थ एक बालकक्ष की स्थापना की है। बाल कक्ष में चित्रकला प्रतियोगिता, कहानी सुनाने, पेंटिंग, सांस्कृतिक कार्यक्रम और कठपुतली का खेल जैसी अनेक गतिविधियां होती रहती हैं। आप सब का बाल कक्ष में स्वागत करके मुझे बहुत खुशी होगी। मैं आपको संसद और संसद संग्रहालय में आने का निमंत्रण देती हूं। मुझे विश्वास है कि यह आप सबके लिए बहुत ज्ञानप्रद अनुभव होगा। आप शायद जानते होंगे कि हमारे यहां एक संसद संग्रहालय है जो लोगों को संसद के करीब लाता है और वहां संसदीय गतिविधियों की एक श्रेष्ठ झलक देखने को मिलती है।

मैं इस बात का उल्लेख करना चाहूंगी कि आप जितनी गंभीरता से अपनी पढ़ाई करेंगे उससे न केवल आपका बल्कि हमारे देश का भविष्य भी उज्ज्वल होगा । नीतिपरक, नैतिक, सदाचारपूर्ण और तर्कसंगत मूल्यों से युक्त अच्छी शिक्षा प्रणाली से देश में शीघ्र बदलाव लाने में मदद मिलेगी तथा पुरुष और महिला तथा अमीर और गरीब के बीच के अंतर को दूर करने में मदद मिलेगी। **Nelson Mandela ने कहा है कि 'Education is the most powerful weapon we can use to change the world.'**

एक बार फिर मैं विवेक वर्धिनी शिक्षा समिति को धन्यवाद देती हूं कि उन्होंने मुझे छात्रों से बात करने का अवसर प्रदान किया। मैं कहना चाहूंगी कि किसी भी संस्था के लिए सौ वर्ष पूरे करना जश्न मनाने का

अवसर होता है । इसके साथ ही यह अपनी उपलब्धियों और कमियों, यदि कोई हों, पर दृष्टिपात करने का अवसर भी होता है। मैं विवेक वर्धिनी बालिका विद्यालय को पिछले सौ वर्ष के दौरान बालिकाओं में शिक्षा के प्रचार-प्रसार और इसे लोकप्रिय बनाने की सराहनीय उपलब्धि के लिए बधाई देती हूं । वास्तव में यह राष्ट्र की और विशेष रूप से हैदराबाद के आस-पास के क्षेत्रों के लोगों की महान सेवा है । मैं कामना करती हूं कि बच्चे अपने सभी भावी प्रयासों में सफल हों और उनका भविष्य उज्ज्वल हो ।

धन्यवाद ।